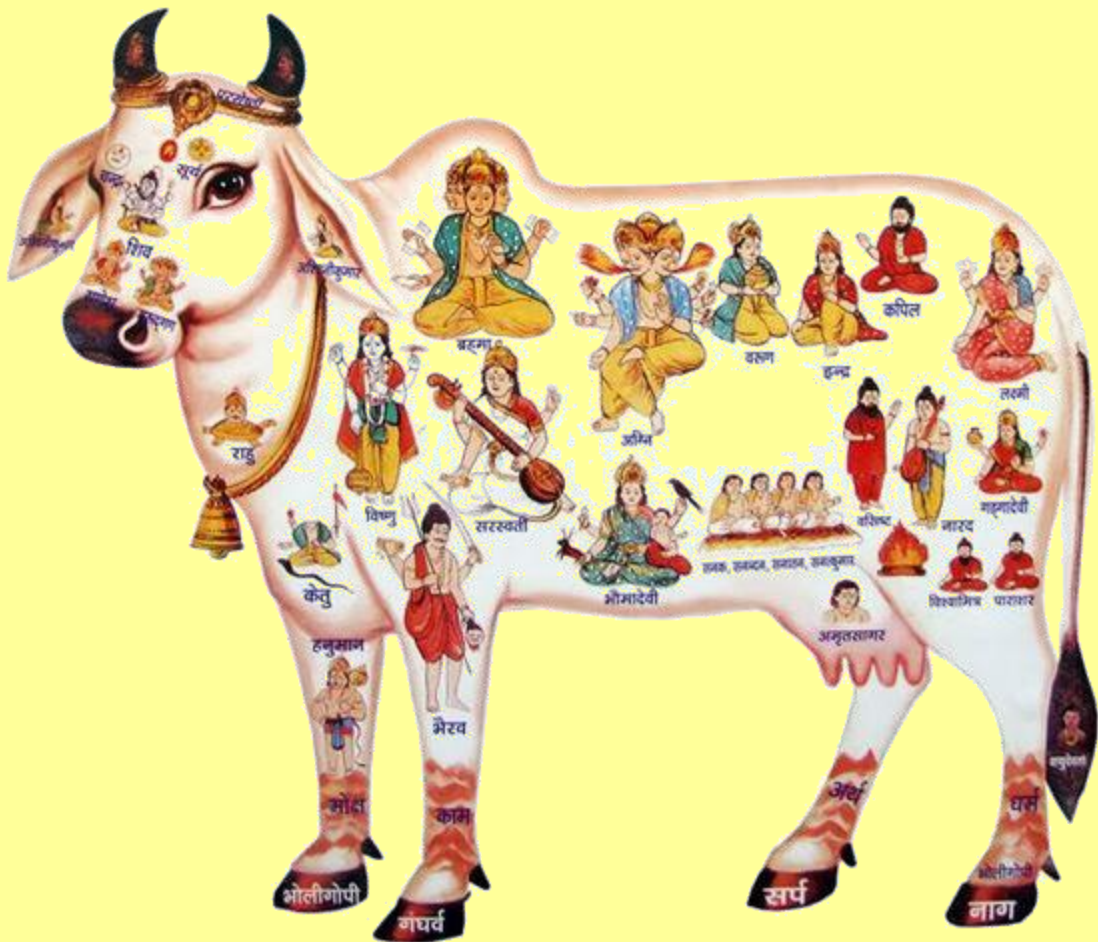


ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

गोवत्स द्वादशी की कहानी



ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ • ॐ

॥ गोवत्स द्वादशी की कहानी ॥

गोवत्स द्वादशी/बछ बारस की पौराणिक कथा के अनुसार प्राचीन समय में भारत में सुवर्णपुर नामक एक नगर था। वहां देवदानी नाम का राजा राज्य करता था। उसके पास एक गाय और एक भैंस थी। उनकी दो रानियां थीं, एक का नाम 'सीता' और दूसरी का नाम 'गीता' था। सीता को भैंस से बड़ा ही लगाव था। वह उससे बहुत नम्र व्यवहार करती थी और उसे अपनी सखी के समान प्यार करती थी।

राजा की दूसरी रानी गीता गाय से सखी-सहेली के समान और बछड़े से पुत्र समान प्यार और व्यवहार करती थी।

यह देखकर भैंस ने एक दिन रानी सीता से कहा- गाय-बछड़ा होने पर गीता रानी मुझसे ईर्ष्या करती है। इस पर सीता ने कहा- यदि ऐसी बात है, तब मैं सब ठीक कर लूंगी।

सीता ने उसी दिन गाय के बछड़े को काट कर गेहूं की राशि में दबा दिया। इस घटना के बारे में

किसी को कुछ भी पता नहीं चलता। किंतु जब राजा भोजन करने बैठा तभी मांस और रक्त की वर्षा होने लगी। महल में चारों ओर रक्त तथा मांस दिखाई देने लगा। राजा की भोजन की थाली में भी मल-मूत्र आदि की बास आने लगी। यह सब देखकर राजा को बहुत चिंता हुई।

उसी समय आकाशवाणी हुई- 'हे राजा! तेरी रानी ने गाय के बछड़े को काटकर गेहूं की राशि में दबा दिया है। इसी कारण यह सब हो रहा है। कल 'गोवत्स द्वादशी' है। इसलिए कल अपनी भैंस को नगर से बाहर निकाल दीजिए और गाय तथा बछड़े की पूजा करें।

इस दिन आप गाय का दूध तथा कटे फलों का भोजन में त्याग करें। इससे आपकी रानी द्वारा किया गया पाप नष्ट हो जाएगा और बछड़ा भी जिंदा हो जाएगा। अतः तभी से गोवत्स द्वादशी के दिन गाय-बछड़े की पूजा करने का महत्व माना गया है तथा गाय और बछड़ों की सेवा की जाती है।



PDF Created by -
<https://pdffile.co.in/>

<https://pdffile.co.in/>